1

एम.ए. सेमेस्टर-I III Paper
हिन्दी

डा. अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कालेज

06.05.20

प्रश्नः संत काव्य परंपरा में कबीर की भूमिका का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर

'संत' शब्द का अर्थ है — साधु, संन्यासी, महात्मा। इसका पारिभाषिक अर्थ है — "जिसने 'सत' रूपी परम तत्त्व का अनुभव प्राप्त कर लिया हो और जो इस प्रकार अपने व्यक्तित्व से ऊपर उठकर उसके साथ तद्रूप हो गया हो।"

हिन्दी साहित्य में 'संत' शब्द का प्रयोग हमेशा से ज्ञानमार्गी निर्गुणिया भक्तों के लिए होता रहा है। इन भक्त कवियों ने जिस काव्य की रचना की उसे ही 'संत काव्य' कहा जाता है। संत साहित्य हिन्दी भाषी जनता के लिए 'नवजागरण' का साहित्य है।

विद्वानों का मत है कि संत साहित्य पर बौद्ध सिद्धों और नाथ-सम्प्रदाय का गहरा प्रभाव पड़ा है। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है। ये सिद्ध और योगी वैष्णव मत के भारी विरोधी थे। इसलिए इन सिद्ध और नाथ योगियों के बारे में कहा गया कि वे ऐसे क्रांतिकारी थे जिन्होंने पिछड़े समाज को जगाने में महती भूमिका अदा की। उनके ही सामाजिक योगदान को इन संत कवियों ने आगे चलकर पुष्पित और पल्लवित किया।

इस संबंध आचार्य रामचंद्र शुक्ल का कहना है — "भक्ति आंदोलन की जो लहर दक्षिण से आई थी उसी ने उत्तर भारत में परिस्थिति के अनुसार हिन्दू-मुसलमान दोनों के लिए एक सामान्य भक्ति-मार्ग की भावना को जगाई। हृदय पक्ष शून्य सामान्य अंतः साधना का मार्ग नाथपंथी निकाल चुके थे, पर रागात्मक

तत्व से रहित साधना से ही मनुष्य की दृष्टि हो सकती है। महाराष्ट्र के प्रसिद्ध भक्त कवि नामदेव (सं० 1936) हिन्दू-मुसलमान दोनों के लिए एक सामान्य मार्ग निकाल चुके थे। इसके पीछे कबीरदास विशेष तत्परता के साथ एक व्यवस्थित रूप में 'निर्गुणपंथ' के नाम से चलाया जिसे 'संत साहित्य' के नाम से अभिहित किया जाता है। कबीर के लिए नाथपंथी योगी बहुत कुछ रास्ता निकाल चुके थे। भेदभाव वाली उपासना के बाहरी विधानों का अलग कर उन्होंने अंतःसाधना पर जोर दिया। नाथपंथियों में अंतः साधना पर जोर था, प्रेम तत्व का अभाव था। कबीर ने यद्यपि कबीर ने नाथपंथियों की बहुत-सी बातों को अपनी 'बानी' में जगह दी पर यह बात उन्हें खटकी।"

वास्तव में कबीर का योगदान नाथपंथियों की तरह हठयोग और अंतः साधना में न था। उन्होंने अपनी भक्ति का आधार प्रेम रूपी तत्व को बनाया जो श्रम पूज्य परमात्मा से मिलने का सहज-सरल उपाय था। जिन्होंने ने भी प्रेम मार्ग से हटकर, योग, ध्यान, पूजा-पाठ और कर्मकांड में अपना दिल लगाया, कबीरदास जी ने उसका कठोर शब्दों में निन्दा की। चाहे वह हिन्दू समुदाय रहा हो या मुसलमान। कबीर ने हिन्दू और मुसलमान दोनों के लिए एक सहज मार्ग अपनाया था, और वह मार्ग था प्रेम का। प्रेम भक्ति में वह ताकत है जिससे पूरी दुनिया को जीता जा सकता है कबीर दास को ऐसा ही विश्वास था। इसलिए एक तरफ वह हिन्दुओं को फटकारते थे तो

दूसरी तरफ मुसलमानों को। कबीर ने एक तरफ हिन्दुओं के भजन, पूजा, तीर्थयात्रा की खिल्ली उड़ाई तो दूसरी तरफ मुसलमानों के रोजा, नमाज आदि पाखण्डों का खंडन किया। वे दोनों समुदायों को मिलाकर एक मध्यम मार्ग निकालना चाहते थे जिसे निर्गुण-पंथ कहा जाता है। कबीर ने अपने काव्य के अनुसार दोनों समुदायों में समन्वय स्थापित करने की कोशिश की। उन्होंने लोक और लोकधर्म, ग्रंथ संन्यासी और गृहस्थ आश्रम दोनों के समन्वय के महत्व को बताया। समन्वय की भावना को जगाकर उन्होंने दिलों को जोड़ने का कार्य किया। उन्होंने ऊँच-नीच, जाति-पाति, छुआछूत की भावना पर प्रहार किया और एकेश्वरवाद का नारा दिया —

"एक नाम सकल जग रे, हिन्दू तुरक न कोय॥"

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उनके कार्यों के महत्व को प्रतिपादित करते हुए लिखा है — "हम साधना के क्षेत्र में वे युग गुरु थे और साहित्य के क्षेत्र में भविष्य द्रष्टा। सच्चे कर्मयोगी होने के कारण वे युग-युग के गुरु थे, उन्होंने 'संत काव्य' का प्रदर्शन कर साहित्य के क्षेत्र में नवनिर्माण का कार्य किया था। उनके समकालीन एवं परवर्ती — सभी संत कवियों ने उनकी वाणी का अनुकरण किया था। हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य की जो विचार-धारा इतनी प्रबल हो उठी है उसके मूल प्रवर्तक कबीर ही थे। इस विचारधारा को मैं निर्गुणवादी गुरुत, अद्वैतवादी कवियों ने भी अपनाया

जितने भी संत कवि हुए उनमें कबीरदास का योगदान सर्वाधिक है। कबीर ने अपने समय में एक तरफ महान समाज सुधारक की भूमिका निभाया दूसरी तरफ एक महान उपदेशक के रूप में समाज के दबे-कुचले एवं अंधकूप में पड़े लोगों को जागृत किया वे राष्ट्र की चेतना को उन्नत करना चाहते थे। अंधभक्ति, सामाजिक बुराई एवं रूढ़ियों से समाज को मुक्त करना चाहते थे। इसलिए संत परंपरा में कबीरदास की भूमिका अग्रणी नायक की थी उनकी वाणी आज भी लोगों का पथ-प्रदर्शित कर रही है।

P.G. Semester III
CC - 3